साप्ताहिक
Live not just breaTHE
दि कार्मिक पोस्ट
MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23
Global School Of Excellence, Obedullaganj
Email- thekaarmiicpost@gmail.com
वर्ष : 12, अंक : 11 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 11 मार्च 2026 से 17 मार्च 2026 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

धरती का बढ़ता बुखार- 2026 में दर्ज हुई इतिहास की पांचवीं सबसे गर्म फरवरी

नई दिल्ली। कॉपरनिकस क्लाइमेट चेंज सर्विस (सी3एस) की ताजा रिपोर्ट बताती है कि फरवरी 2026 इतिहास की पांचवीं सबसे गर्म फरवरी रही, जब वैश्विक तापमान औद्योगिक काल से पहले की तुलना में 1.49 डिग्री सेल्सियस अधिक दर्ज किया गया। देखा जाए तो बढ़ती गर्मी अब महज आंकड़ों तक सीमित नहीं रही, बल्कि दुनिया के कई हिस्सों में भारी बारिश, बाढ़ और शक्तिशाली तूफानों के रूप में लोगों की जिंदगी को प्रभावित कर रही है।

फरवरी में यूरोप और उत्तरी अफ्रीका के कई देशों में लगातार बारिश से शहर और गांव डूब गए, जबकि ऑस्ट्रेलिया और अफ्रीका के कुछ हिस्सों में भी बाढ़ ने हजारों लोगों को बेघर कर दिया। वैज्ञानिकों का कहना है कि बढ़ते तापमान के साथ समुद्र भी गर्म हो रहे हैं और ध्रुवों की बर्फ घट रही है, जिससे मौसम और अधिक चरम होता जा रहा है। ऐसे में फरवरी 2026 की यह स्थिति दुनिया के लिए एक स्पष्ट चेतावनी है कि अगर समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो जलवायु संकट का असर सीधे लोगों की सुरक्षा, आजीविका और भविष्य पर पड़ सकता है। फरवरी 2026 ने एक बार फिर यह याद दिला दिया कि धरती का तापमान लगातार बढ़ रहा है और इसका असर अब लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी पर साफ दिखने लगे हैं। यूरोप की कॉपरनिकस क्लाइमेट चेंज सर्विस (सी3एस) ने भी अपने ताजा रिपोर्ट में जानकारी दी है कि फरवरी 2026, जलवायु रिकॉर्ड का अब तक का पांचवां सबसे गर्म फरवरी रहा। इस महीने वैश्विक औसत तापमान औद्योगिक काल से पहले की तुलना में 1.49 डिग्री सेल्सियस अधिक रिकॉर्ड किया गया। मतलब कि बढ़ता तापमान एक बार फिर डेढ़ डिग्री सेल्सियस की लक्ष्मण रेखा के करीब पहुंच गया। इस महीने पृथ्वी की सतह के पास हवा का औसत तापमान 13.26 डिग्री सेल्सियस रहा, जो 1991 से 2020 के औसत की तुलना में 0.53 डिग्री सेल्सियस अधिक है। बता दें कि अब तक का सबसे गर्म फरवरी 2024 में दर्ज किया गया था। देखा जाए तो बढ़ती गर्मी अब केवल आंकड़ों तक सीमित नहीं, बल्कि दुनिया के कई हिस्सों में भीषण बारिश, बाढ़ और तूफानों के रूप में लोगों की जिंदगी पर भारी पड़ रही है। बता दें कि 2026 की शुरुआत ही पांचवें सबसे गर्म जनवरी के साथ हुई थी, जब बढ़ता तापमान सामान्य से 1.47 डिग्री सेल्सियस अधिक रिकॉर्ड किया गया था। रिपोर्ट से पता चला है कि इस साल फरवरी के दौरान पश्चिमी यूरोप और उत्तरी अफ्रीका में मौसम बेहद असामान्य रहा। फ्रांस, स्पेन, पुर्तगाल और मोरक्को में लगातार तेज बारिश हुई। बारिशों की इन घटनाओं ने कई शहरों और गांवों को डुबो दिया। सड़कों पर नदियां बहने लगीं, घरों में पानी भर गया और हजारों लोगों की जिंदगी, रोजगार और सपने एक झटके में बह गए। फरवरी में केवल यूरोप ही नहीं, बल्कि दुनिया के अन्य हिस्सों में भी बाढ़ का कहर देखा गया।ऑस्ट्रेलिया, मोजाम्बिक और बोत्सवाना में भी कई इलाकों में भीषण बाढ़ ने लोगों को बेघर कर दिया।

रिपोर्ट से पता चला है कि फरवरी में यूरोप के बाहर भी कई क्षेत्रों में तापमान सामान्य से अधिक रहा। अमेरिका, उत्तर-पूर्वी कनाडा, मध्य पूर्व, मध्य एशिया और पूर्वी अंटार्कटिका में फरवरी के दौरान तापमान औसत से अधिक दर्ज किया गया। वहीं दूसरी ओर अलास्का, उत्तरी कनाडा, ग्रीनलैंड और उत्तरी रूस में मौसम ठंडा रहा और यहां तापमान सामान्य से नीचे दर्ज किया गया। वैज्ञानिकों के अनुसार इन आपदाओं के पीछे एक बड़ी वजह %एटमॉस्फेरिक रिवर% हैं। %एटमॉस्फेरिक रिवर%, आसमान में बनने वाली नमी से भरी ये लंबी और संकरी हवाओं की धाराएं होती हैं, जो जब जमीन पर पहुंचती हैं तो रिकॉर्ड बारिश होती है। धरती का बढ़ता बुखार- 2026 में दर्ज हुई इतिहास की पांचवीं सबसे गर्म फरवरी

कॉपरनिकस से जुड़ी वैज्ञानिक सामंथा बर्गेस का इस बारे में कहना है बढ़ते तापमान के कारण मौसम में चरम उतार-चढ़ाव बढ़ रहे हैं, कहीं रिकॉर्ड बारिश हो रही है तो कहीं सूखा पड़ रहा है। ऐसे में इनसे निपटने के लिए दुनिया को तुरंत कदम उठाने की जरूरत है। यूरोप में फरवरी के दौरान मौसम में बड़ा अंतर देखने को मिला। महाद्वीप के पश्चिमी और दक्षिणी हिस्सों में सामान्य से कहीं ज्यादा बारिश हुई, जबकि बाकी कई इलाकों में हालात अपेक्षाकृत सूखे रहे। यूरोप के बाहर भी मौसम असामान्य रहा। ऑस्ट्रेलिया के अधिकांश हिस्सों, दक्षिण-पूर्वी ब्राजील, उत्तरी अमेरिका के उत्तरी हिस्सों और मध्य एशिया के कुछ भागों में सामान्य से ज्यादा बारिश दर्ज की गई। वहीं दूसरी ओर दक्षिणी अमेरिका, उत्तरी मैक्सिको, पूर्वी चीन, दक्षिण अमेरिका के कुछ हिस्सों और दक्षिण-पूर्वी अफ्रीका में बारिश औसत से कम रही। रिपोर्ट बताती है कि फरवरी 2026 में समुद्र की सतह का औसत तापमान 20.88 डिग्री सेल्सियस रहा, जो इस महीने के लिए रिकॉर्ड में संयुक्त रूप से दूसरा सबसे अधिक है। इस दौरान तापमान फरवरी 2025 के करीब-करीब बराबर रहा। वहीं जनवरी 2024 के रिकॉर्ड से यह करीब 0.18 डिग्री सेल्सियस कम है। वैज्ञानिकों के अनुसार उत्तरी अटलांटिक के मध्य और पश्चिमी हिस्सों में अपेक्षाकृत ठंडा समुद्री तापमान और उपोष्णकटिबंधीय उत्तरी अटलांटिक में ज्यादा गर्म पानी के बीच बड़ा अंतर देखने को मिला। माना जा रहा है कि इसी तापमान अंतर ने उन तूफानों के बनने की स्थिति को मजबूत किया, जो बाद में यूरोप तक पहुंचे।

धरती के सबसे ठंडे इलाके भी इस बदलाव से अछूते नहीं हैं। आर्कटिक क्षेत्र में फरवरी के दौरान समुद्री बर्फ का विस्तार सामान्य से करीब पांच फीसदी कम रहा और यह इस महीने के लिए तीसरा सबसे कम स्तर है। यह बताता है कि दुनिया का सबसे ठंडा इलाका भी बढ़ते तापमान के सामने बेबस है। कम होती बर्फ इस बात का भी संकेत है कि धरती के ध्रुव तेजी से बदल रहे हैं, जिसका असर पूरे वैश्विक मौसम तंत्र पर पड़ सकता है। दूसरी तरफ दक्षिणी ध्रुव यानी अंटार्कटिका में फरवरी के दौरान समुद्री बर्फ का कुल फैलाव लगभग सामान्य के आसपास रहा। यह स्थिति पिछले चार वर्षों से बिल्कुल अलग है, जब यहां बर्फ का स्तर औसत से 25 से 33 प्रतिशत तक कम देखा गया था।

उत्तर प्रदेश में रिकॉर्ड की गई हैं 2,397 डॉल्फिनें, संरक्षण के लिए किए जा रहे हैं प्रयास- रिपोर्ट

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के चीफ वाइल्डलाइफ वार्डन ने अपनी नई रिपोर्ट में जानकारी दी है कि राज्य में मछली पकड़ने के उपकरणों से होने वाली मौतों को कम करने के लिए कई कदम उठाए गए हैं गंगा और उसकी सहायक नदियों में किए गए सर्वे के मुताबिक उत्तर प्रदेश में 2,397 गंगा डॉल्फिन दर्ज की गई थी, जो किसी भी राज्य में सबसे अधिक हैं।

एनजीटी में दाखिल रिपोर्ट के अनुसार राज्य सरकार डॉल्फिन के आवास संरक्षण, मछली पकड़ने के जाल से होने वाली मौतों को कम करने और समुदाय की भागीदारी को बढ़ाने के लिए कई कदम उठा रही है। उत्तरी प्रदेश में गंगा और उसकी सहायक नदियों यमुना, चंबल, केन, गोमती, राप्ती, बेतवा और घाघरा के करीब 3,450 किलोमीटर लम्बे क्षेत्र में डॉल्फिनों का व्यापक सर्वे किया जा रहा है। इस दौरान डॉल्फिनों की सटीक पहचान सुनिश्चित करने के लिए हाइड्रोफोन और जियो-रेफरेंस तकनीक जैसे आधुनिक उपकरणों की मदद ली गई है।

2012 में सर्वे किए गए हिस्सों में करीब 671 डॉल्फिन पाई गई थी। इसके बाद 2021 से 2023 के दौरान किए गए राष्ट्रीय सर्वे में भारत भर में 6,327 डॉल्फिनों की मौजूदगी दर्ज की गई। इनमें से 2,397 डॉल्फिनें अकेले उत्तर प्रदेश में रिकॉर्ड की गई। यह आंकड़ा किसी भी राज्य में डॉल्फिनों की पाई गई संख्या से अधिक है। वर्तमान में उत्तर प्रदेश के 13 जिलों में गंगा नदी के तट पर दूसरा राष्ट्रीय सर्वे किया जा रहा है। यह जानकारी उत्तर प्रदेश के चीफ वाइल्डलाइफ वार्डन ने 17 फरवरी 2026 को नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) में प्रस्तुत रिपोर्ट में दी है। उत्तर प्रदेश ने 2023 में गंगा नदी डॉल्फिन को राज्य का जलीय जीव घोषित किया था। इसके बाद से राज्य सरकार ने डॉल्फिन के संरक्षण को मजबूत करने के लिए उनके प्राकृतिक आवासों की सुरक्षा और बहाली पर विशेष जोर दिया है। डॉल्फिन के कई अहम आवास राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य और सारनाथ कछुआ अभयारण्य के संरक्षित नदी क्षेत्रों में स्थित हैं। इनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए नियमित गश्त, शिकार और अवैध गतिविधियों पर रोक, चिन्हित नदी हिस्सों में रेत खनन पर नियंत्रण और डॉल्फिन के आवास का वैज्ञानिक मानचित्रण जैसे कदम उठाए जा रहे हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य डॉल्फिन के संवेदनशील आवासों को सुरक्षित रखना है। रिपोर्ट में वैज्ञानिक निगरानी की कमी पर भी बात की गई है। उत्तर प्रदेश वन विभाग ने वाइल्डलाइफ इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया, डब्ल्यूडब्ल्यूएफ इंडिया और वाइल्डलाइफ ट्रस्ट ऑफ इंडिया के साथ मिलकर एकीकृत और वैज्ञानिक रूप से मान्य विधियों से डॉल्फिन आबादी का सर्वे किया है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि जागरूकता कार्यक्रम महज औपचारिक गतिविधियां नहीं हैं, बल्कि उन्हें जमीनी स्तर पर चल रहे संरक्षण प्रयासों से जोड़ा गया है। समुदाय की भागीदारी बढ़ाने के साथ-साथ इंसानों और डॉल्फिन के बीच टकराव को कम करने के लिए माई गंगा, माई डॉल्फिन अभियान चलाया जा रहा है। इसके तहत प्रशिक्षित सामुदायिक स्वयंसेवकों, जिन्हें 'डॉल्फिन मित्र' कहा जाता है, को मछुआरों के स्थानीय समुदाय और वन विभाग के बीच सेतु की भूमिका निभाने के लिए जोड़ा गया है। ये स्वयंसेवक जागरूकता फैलाने के साथ-साथ डॉल्फिन संरक्षण से जुड़े प्रयासों में सहयोग भी करते हैं। सहभागी संरक्षण को मजबूत करने के लिए क्षमता-निर्माण कार्यशालाएं, आजीविका से जुड़े जागरूकता कार्यक्रम और परामर्श बैठकें नियमित रूप से आयोजित की जाती हैं। इस भागीदारी से डॉल्फिन को जानबूझकर नुकसान पहुंचाने की घटनाओं में कमी आई है। साथ ही, डॉल्फिन के फंसने की घटनाओं की बेहतर जानकारी मिल रही है और बचाव अभियानों के दौरान स्थानीय समुदाय का सहयोग भी बढ़ा है। रिपोर्ट में मछली पकड़ने से डॉल्फिन की होने वाली मौतों और 'घोस्ट नेट' (छूटे हुए जाल) की समस्या का भी जिक्र किया गया है। इसके मुताबिक मछली पकड़ने के उपकरणों से होने वाली मौतों को कम करने के लिए कई कदम उठाए गए हैं। इनमें डॉल्फिन को जाल से दूर रखने वाले उपकरण 'पिंगर्स' को बढ़ावा देना और बाय-बैक पहल के जरिए पुराने या छोड़े गए जालों को हटाना शामिल है। इसके साथ ही मछुआरा समुदाय को मछली पकड़ने के सतत तरीकों के बारे में जागरूक किया जा रहा है। राज्य में डॉल्फिन संरक्षण के प्रयास अलग-अलग नदी क्षेत्रों की स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखकर किए जा रहे हैं। इसमें रेत खनन, मछली पकड़ने की तीव्रता, नावों की आवाजाही और प्रदूषण जैसे स्थानीय खतरों को भी ध्यान में रखा जाता है। रिपोर्ट में वित्तीय वर्ष 2025-26 के दौरान केंद्र सरकार की वन्यजीव आवासों के समेकित विकास योजना के तहत गंगा डॉल्फिन संरक्षण के लिए स्वीकृत 91.235 लाख रुपए से किए जाने वाले प्रस्तावित कार्यों का भी विस्तृत ब्यौरा दिया गया है। इसके साथ ही स्थानीय खतरों से निपटने के लिए डिवीजन स्तर पर सूक्ष्म-स्तरीय योजना भी बनाई जा रही है। उत्तर प्रदेश वन विभाग, टर्टल सर्वाइवल अलायंस के सहयोग से नहर प्रणाली में फंसने वाली डॉल्फिनों के लिए बचाव अभियान भी चला रहा है। 2024 और 2025 में शारदा फीडर नहर में कई सफल बचाव अभियान किए गए। इन अभियानों में डॉल्फिन को सुरक्षित तरीके से पकड़ना, पशु चिकित्सकीय जांच और उपयुक्त प्राकृतिक आवास में छोड़ना सुनिश्चित किया जाता है। इसके लिए तय मानक संचालन प्रक्रियाओं (एसओपी) का पालन किया जाता है।

जम्मू-कश्मीर की 35 आर्द्रभूमियां गायब! एनजीटी में पर्यावरण मंत्रालय ने सौंपी रिपोर्ट

ज़म्मूझ। रिपोर्ट के मुताबिक, पर्यावरण मंत्रालय ने जम्मू-कश्मीर वेटलैंड अथॉरिटी को प्राथमिकता में राजस्व रिकॉर्ड उपलब्ध कराने के लिए ईमेल भेजा था। इसके जवाब में जम्मू-कश्मीर के वन, पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण विभाग ने आर्द्रभूमियों और झीलों की स्थिति पर प्रगति रिपोर्ट भेजी है। इसमें हर साइट के भौगोलिक निर्देशांक (जियो-कोऑर्डिनेट्स), राजस्व क्षेत्र और वास्तविक स्थिति व सीमा निर्धारण की जानकारी शामिल की गई है। स्पेस एप्लिकेशन्स सेंटर द्वारा जारी एटलस में कुल 260 आर्द्रभूमियां दर्ज हैं, जिनमें से 35 साइट गायब पाई गई। इसके अलावा, क्षेत्र में 34 नई आर्द्रभूमियों की पहचान हुई है। पर्यावरण मंत्रालय ने स्पष्ट किया है कि राज्यों और स्टेट वेटलैंड अथॉरिटीज को अपने क्षेत्र में मौजूद आर्द्रभूमियों की निगरानी और संरक्षण की पूरी जिम्मेदारी दी गई है। दिल्ली में जलस्रोतों को लेकर एक चौंकाने वाली जानकारी सामने आई है। दिल्ली जल बोर्ड (डीजेबी) ने नेशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल (एनजीटी) को जानकारी दी है कि उसके नियंत्रण में कोई भी जलाशय नहीं है। एनजीटी के आदेश पर दाखिल अपने हलफनामे में जल बोर्ड ने कहा कि राजस्व अभिलेखों के अनुसार पहले उसकी जमीन पर छह जलाशय मौजूद थे, लेकिन बाद में इन जमीनों को सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट, सीवेज पंपिंग स्टेशन और भूमिगत जलाशय बनाने के लिए स्थानांतरित कर दिया गया। गौरतलब है कि एनजीटी ने दिल्ली जल बोर्ड (डीजेबी) को निर्देश दिया था कि वह राजस्व अभिलेखों के आधार पर अपने नियंत्रण में आने वाले हर जलाशय का क्षेत्रफल और भू-स्थानिक निर्देशांक (जियो-कोऑर्डिनेट्स) सार्वजनिक करे। साथ ही अधिकरण ने यह भी पूछा था कि इन जलाशयों की मौजूदा स्थिति और क्षेत्रफल क्या है, तथा उन पर हुए अतिक्रमण को हटाने के लिए अब तक क्या कदम उठाए गए हैं। डीजेबी के मुताबिक, जब इन जमीनों का हस्तांतरण हुआ, उस समय वहां कोई जलाशय मौजूद नहीं था। बाद में इन जगहों पर जल बोर्ड से जुड़ी सुविधाओं का निर्माण किया गया। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि जिन जमीनों पर अब डीजेबी के संयंत्र बने हैं, उनका उपयोग पूरी तरह पानी से जुड़ी सेवाओं के लिए किया जा रहा है

जल गंगा संवर्धन अभियान

नदियों के उद्गम स्थलों को व्यवस्थित रूप से किया जाए विकसित

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि जल गंगा संवर्धन अभियान केवल पर्यावरण नहीं, विकास का आधार भी है। यह भावी पीढ़ियों के भविष्य को सुरक्षित रखने का भी एक प्रयास है। अभियान अंतर्गत संचालित हर गतिविधि में राज्य से ग्राम स्तर तक जनभागीदारी को प्रोत्साहित करना आवश्यक है। भू-जल स्त्रोतों के दोहन से गिरते भू-जल स्तर, प्राचीन जल संग्रहण संरचनाओं के क्षरण और नदियों के कम होते प्रवाह का प्रभाव सभी पर पड़ रहा है। इस स्थिति में सुधार के लिए भी सभी को मिलकर प्रयास करना होगा। प्रदेश में पिछले जल गंगा संवर्धन अभियान के सुखद परिणाम प्राप्त हुए हैं। वर्ष-2026 के अभियान में भी हमें जन-जन की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए अभियान को प्रभावी और परिणामूलक बनाना है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव मंत्रालय में गुरूवार को आयोजित बैठक को संबोधित कर रहे थे। बैठक में अपर मुख्य सचिव डॉ. राजेश राजौरा, श्री अशोक बर्णवाल, श्री संजय दुबे, श्री नीरज मंडलोई, श्रीमती दीपाली रस्तोगी, श्री शिवशेखर शुक्ला एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे। समस्त जिला कलेक्टर्स वर्चुअली शामिल हुए। बैठक में वर्ष 2025 के जल गंगा संवर्धन अभियान की प्रमुख उपलब्धियों और वर्ष-2026 की कार्ययोजना पर चर्चा हुई।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जल संरचनाओं के जलग्रहण क्षेत्र पर अतिक्रमण के?विरूद्ध कार्यवाही करने के निर्देश दिए। उन्होंने ऐसी गतिविधियों पर सतत् रूप से निगरानी रखने की आवश्यकता बताई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश से निकलने वाली नदियों के उद्गम स्थलों को व्यवस्थित रूप से विकसित किया जाएगा और उनके आस-पास सघन पौधरोपण किया जाए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में व्यक्तिगत पहल तथा सामुदायिक सहभागिता से प्याऊ लगाने की व्यवस्था को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने प्लास्टिक की बोतल के उपयोग को हतोत्साहित करने के निर्देश दिए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सार्वजनिक स्थलों पर सुगमता से स्वच्छ शीतल पेयजल उपलब्ध कराने को सामाजिक दायित्व के रूप में समाज में स्थापित करने की आवश्यकता बताई। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जिन जिलों में बेहतर नवाचार हुए हैं, वे अपने यह प्रयास अन्य जिलों से साझा करें तथा जिले परस्पर इस तरह के नवाचारों का आदान-प्रदान करें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रभारी मंत्री जिला स्तर पर जल गंगा संवर्धन अभियान को नेतृत्व प्रदान करें। सांसद, विधायक, पंचायत, नगरीय?निकाय के सभी प्रतिनिधि सक्रियता से अभियान में सहभागिता करें। मैदानी स्तर पर कार्य कर रहे स्वयंसेवी संस्थाओं और सीएसआर संगठनों को भी जनसहभागिता संबंधी गतिविधियों में जोड़ा जाए। जिला कलेक्टर नोडल अधिकारी के रूप में कार्यों के क्रियान्वयन की प्रभावी मॉनीटरिंग सुनिश्चित करें। अभियान में पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग नोडल और नगरीय प्रशासन एवं विकास सह नोडल विभाग होगा। राजस्व, जल संसाधन, उद्यानिकी, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी, नर्मदा घाटी विकास, वन, जन अभियान परिषद, उद्योग एवं एमएसएमई, पर्यावरण, संस्कृत, महिला एवं बाल विकास, स्कूल शिक्षा तथा कृषि विकास एवं किसान कल्याण विभाग सहभागिता करेंगे। बैठक में अभियान के अंतर्गत वर्ष-2025 की प्रमुख उपलब्धियों का प्रस्तुतिकरण भी किया गया।

19 मार्च से प्रारंभ होगा राज्य स्तरीय अभियान

बैठक में बताया गया कि जल गंगा संवर्धन अभियान वर्ष प्रतिपदा 19 मार्च से एक साथ आरंभ किया जाएगा। प्रदेश के सभी जिलों में विक्रम संवत् और पर्यावरण, जलीय संरचनाओं के संरक्षण व संवर्धन पर गतिविधियां संचालित होंगी। अभियान के अंतर्गत 23 से 24 मई तक भोपाल में अंतर्राष्ट्रीय जल सम्मेलन का आयोजन होगा, 25 से 26 मई तक शिप्रा परिक्रमा यात्रा, 26 मई को गंगा दशहरा के अवसर पर शिप्रा तट उज्जैन में महादेव नदी कथा, 30 मई से 7 जून तक भारत भवन भोपाल में सदानीरा समागम होगा। इसमें प्रदेश की कृषि भूमि के सैटेलाइट मैपिंग का लोकार्पण किया जाएगा। अभियान के अंतर्गत विभिन्न विभागों द्वारा अभियान अंतर्गत कार्य प्रस्तावित किये गये। पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग द्वारा प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, वाटरशेड विकास 2.0 के अंतर्गत जल संरक्षण और संवर्धन के 170 करोड़ रूपए लागत के 2200 कार्यों का क्रियान्वयन किया जाएगा। वर्ष 2025 में आरंभ 2500 करोड़ रूपए की लागत के 86 हजार 360 खेत-तालाब और 553 अमृत सरोवरों के कार्यों को पूर्ण किया जाएगा। विभाग जल जीवन मिशन की सिंगल विलेज स्कीम के कार्य क्षेत्रों में भू-जल संवर्धन के कार्य और प्राचीन परम्परागत जल संग्रहण संरचनाओं के जीर्णोद्धार का कार्य भी करेगा। अभियान के अंतर्गत मां नर्मदा परिक्रमा पथ, गंगोत्री हरित परियोजना तथा एक बगिया माँ के नाम परियोजना के अंतर्गत गतिविधियां संचालित की जाएंगी। नगरीय विकास विभाग नगरीय निकायों में 120 जल संग्रहण संरचनाओं का संवर्धन और 50 हरित क्षेत्रों का विकास करेगा। युवाओं की भागीदारी के लिए उन्हें अमृत मित्र बनाकर %माय भारत पोर्टल% पर पंजीयन किया जाएगा। अभियान में 4 हजार 130 रेनवॉटर हार्वेस्टिंग प्रणाली स्थापित करने का लक्ष्य है। नदियों में मिलने वाले 20 नालों की शोधन प्रक्रिया का क्रियान्वयन किया जाएगा। नगरीय?निकायों द्वारा नदी, तालाब, बावड़ी का संवर्धन, नालों की सफाई, बड़े पैमाने पर पौधरोपण भी किया जाएगा। वातावरण निर्माण के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं, जागरूकता रैली और शालाओं में आईईसी गतिविधियां संचालित होंगी।

लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग द्वारा एकल ग्राम नल-जल योजनाओं के भूजल स्त्रोतों के रिचार्ज, पेयजल स्त्रोतों के आस-पास साफ-सफाई और रख-रखाव के लिए गतिविधियां संचालित की जाएंगी। वन विभाग द्वारा अविरल निर्मल नर्मदा अंतर्गत भूजल संवर्धन के कार्य तथा वर्षा ऋतु में 28 लाख पौधों के रोपण की योजना है। वन्य जीवों को पानी की उपलब्धता के लिए 25 करोड़ 10 लाख रूपए की लागत से 400 से अधिक जल संग्रहण संरचनाओं का निर्माण और 189 तालाबों का गहरीकरण किया जाएगा।

महिला एवं बाल विकास विभाग आंगनवाड़ी केन्द्रों में रेनवॉटर हार्वेस्टिंग स्थापित करने, जल संरक्षण के ग्राम स्तर पर अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करने और आंगनवाड़ी केन्द्रों को जल एवं पोषण मॉडल केन्द्र के रूप में विकसित कर समुदाय को प्रेरित करने जैसी गतिविधियां संचालित करेगा। प्रत्येक आंगनवाड़ी केन्द्र में रेनवॉटर हार्वेस्टिंग के लिए 16 हजार रूपए और पोषण वाटिका के लिए 10 हजार रूपए स्वीकृत हैं।

मौसम के रंग- पहाड़ों पर बारिश-बर्फबारी-ओलावृष्टि, हिमाचल, राजस्थान व गुजरात में लू

शिमला। भारत में इन दिनों मौसम के कई अलग-अलग रंग देखने को मिल रहे हैं। उत्तर भारत के पहाड़ी इलाकों में बारिश और बर्फबारी की संभावना है, जबकि कुछ क्षेत्रों में गर्मी और लू या हीटवेव की स्थिति भी बन रही है। मौसम विभाग के द्वारा आज सुबह, 10 मार्च, 2026 को जारी पूर्वानुमान के अनुसार, कई जगहों पर तेज हवाएं, आंधी, बिजली गिरने और ओलावृष्टि की भी आशंका जताई गई है।

इस समय उत्तर भारत के ऊपर पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय है। जो मध्य स्तरों के वायुमंडल में बनी हुई है और इसका असर खासतौर पर पश्चिमी हिमालयी इलाकों पर देखने को मिलेगा। पश्चिमी विक्षोभ के कारण जम्मू और कश्मीर, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड में मौसम में बदलाव होगा। इसके कारण बादल बनने और बारिश या बर्फबारी हो सकती है।

इसके साथ ही उपोष्णकटिबंधीय पश्चिमी जेट स्ट्रीम भी उत्तर-पश्चिम भारत के ऊपर सक्रिय है। इसकी हवा की गति लगभग 85 नॉट यानी बहुत तेज है। यह भी मौसम को प्रभावित करने में बड़ी भूमिका निभाती है। उपरोक्त मौसमी गतिविधियों के चलते जम्मू और कश्मीर में आने वाले दिनों में मौसम के खराब रहने के आसार हैं। इसी क्रम में 10 से 12 मार्च के बीच जम्मू और कश्मीर में वज्रपात होने, 30 से 50 किमी प्रति घंटे की रफ्तार से तूफानी हवाओं के साथ बारिश और बर्फबारी होने का पूर्वानुमान है। इस दौरान राज्य के कई इलाकों में हल्की से मध्यम बारिश जबकि कुछ हिस्सों में भारी बारिश व जमकर बर्फबारी का अंदेशा जताया गया है। इसके साथ ही 10 मार्च को प्रदेश के कुछ हिस्सों में ओलावृष्टि होने की भी आशंका जताई गई है।

हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्सों में 11 और 12 मार्च को ओले गिरने का अंदेशा जताया गया है। इसके अलावा 11, 12, 14 और 15 मार्च को गरज के साथ बारिश और तेज हवाएं चल सकती हैं। इस दौरान पहाड़ी इलाकों में मौसम अचानक बदल सकता है, इसलिए लोगों और पर्यटकों को सावधान रहने की सलाह दी गई है। पूर्वोत्तर भारत के कई राज्यों में भी मौसम सक्रिय रहने वाला है। अरुणाचल प्रदेश में 10 से 15 मार्च तक गरज के साथ बारिश और बिजली गिरने के आसार हैं। वहीं 10 से 14 मार्च के बीच असम और मेघालय, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम और त्रिपुरा में बारिश और तेज हवाएं चल सकती हैं। इन क्षेत्रों में 30 से 50 किमी प्रति घंटे की गति से तेज हवाएं चलने की आशंका जताई गई है। पूर्वी भारत के कई राज्यों में भी मौसम में बदलाव देखने को मिलेगा। 10 और 11 मार्च को बिहार और झारखंड में कुछ हिस्सों में गरज के साथ हल्की से मध्यम बारिश व बिजली गिरने के आसार हैं। वहीं, पश्चिम बंगाल में गंगा के मैदानी इलाकों में 10 मार्च को बारिश हो सकती है। वहीं उत्तर बंगाल और सिक्किम में 10 से 13 मार्च के बीच बारिश और आंधी की आशंका है। दक्षिण भारत के कुछ हिस्सों में भी हल्की बारिश की संभावना जताई गई है। आज, 10 मार्च को केरल और माहे में कुछ हिस्सों में गरज के साथ हल्की बारिश हो सकती है। हालांकि दक्षिण भारत के अधिकतर इलाकों में मौसम के सामान्य रहने की संभावना है। देश के कुछ हिस्सों में तेज हवाएं और ओलावृष्टि होने के आसार हैं जिससे नुकसान होने की आशंका है। विभाग ने कहा है कि तेज हवाओं से पेड़ों की शाखाएं टूट सकती हैं और बड़े पेड़ भी गिर सकते हैं। इसके कारण बिजली और संचार लाइनों को भी नुकसान पहुंच सकता है। कृषि क्षेत्र में भी नुकसान होने की आशंका है। खासकर केले और पपीते के पेड़ों को अधिक नुकसान हो सकता है। इसके अलावा बागवानी और खड़ी फसलों को भी नुकसान पहुंच सकता है। ओलावृष्टि के दौरान खुले स्थानों पर मौजूद लोगों और पशुओं को चोट लग सकती है। तेज हवाओं के कारण कच्चे मकानों और झोपड़ियों को भी नुकसान हो सकता है। मौसम विभाग ने अपने पूर्वानुमान में कहा है कि आने वाले दिनों में देश के कई हिस्सों में तापमान में बदलाव देखने को मिलेगा।

पचमढ़ी बनेगा अन्य राज्यों के लिए रोल मॉडल उज्जैन कमिश्नर श्री आशीष सिंह ने मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड की ओर से प्राप्त किया सम्मान

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के विजनरी नेतृत्व और प्रदेश में रिस्पॉन्सिबल टूरिज्म को बढ़ावा देने के प्रयासों के फलस्वरूप मध्यप्रदेश के पर्यटन मानचित्र पर एक और स्वर्णिम अध्याय जुड़ गया है। जर्मनी के बर्लिन में आयोजित आईटीबी बर्लिन ट्रैवल मार्ट में प्रदेश के प्रसिद्ध हिल स्टेशन पचमढ़ी को प्रतिष्ठित ग्रीन डेस्टिनेशंस ब्रॉन्ज सर्टिफिकेट से सम्मानित किया गया है। यह प्रमाणन नीदरलैंड स्थित ग्रीन डेस्टिनेशंस फाउंडेशन द्वारा प्रदान किया जाता है, जो ग्लोबल सस्टेनेबल टूरिज्म काउंसिल से मान्यता प्राप्त संस्था है।

पचमढ़ी यह अंतर्राष्ट्रीय गौरव हासिल करने वाला देश का पहला हिल स्टेशन बन गया है। म.प्र. टूरिज्म बोर्ड की ओर से उज्जैन कमिश्नर श्री आशीष सिंह ने यह सम्मान प्राप्त किया। पर्यटन, संस्कृति और धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री धर्मेन्द्र भाव सिंह लोधी ने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ. यादव के कुशल मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश पर्यटन नित नई ऊँचाइयों को छू रहा है। पचमढ़ी को मिला यह ग्रीन डेस्टिनेशन ब्रॉन्ज सर्टिफिकेट इस बात का प्रमाण है कि हम पर्यटन विकास के साथ पर्यावरण संरक्षण और स्थानीय संस्कृति को सहेजने में भी अग्रणी हैं। यह उपलब्धि पचमढ़ी को वैश्विक स्तर पर एक सस्टेनेबल टूरिज्म डेस्टिनेशन के रूप में स्थापित करेगी, जिससे यहाँ अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होगी।

प्रबंध संचालक टूरिज्म बोर्ड डॉ. इलैया राजा टी ने कहा कि यह सम्मान पचमढ़ी में विरासत संरक्षण, अपशिष्ट प्रबंधन ऊर्जा और जलवायु संरक्षण के क्षेत्र में किए जा रहे उत्कृष्ट कार्यों की वैश्विक पहचान है। इस उपलब्धि के साथ ही अब पचमढ़ी देश के अन्य पहाड़ी पर्यटन स्थलों और इको-टूरिज्म साइट्स के लिए एक रेप्लिकेबल मॉडल (अनुकरणीय मॉडल) के रूप में उभरा है। यह मान्यता प्रदेश में रिस्पॉन्सिबल टूरिज्म को और अधिक सशक्त बनाएगी। ग्रीन डेस्टिनेशंस अंतर्राष्ट्रीय स्तर का एक प्रतिष्ठित प्रमाणन कार्यक्रम है, जो आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिरता के 3 मुख्य स्तंभों पर केंद्रित है। पचमढ़ी का चयन अंतर्राष्ट्रीय मानकों पर आधारित एक अत्यंत जटिल और सूक्ष्म मूल्यांकन प्रक्रिया के बाद किया गया। इसके तहत डेस्टिनेशन मैनेजमेंट, प्रकृति एवं परिदृश्य,

पर्यावरण और जलवायु, संस्कृति एवं परंपरा, सामाजिक कल्याण और व्यापारिक संचार जैसे 6 प्रमुख विषयों के 75 कड़े मापदंडों पर पचमढ़ी का परीक्षण किया गया। मूल्यांकन में पचमढ़ी ने 10 में से 6.5 का स्कोर और 40त्न का त्स्ज्ञष्ट अनुपालन स्तर हासिल किया।

पर्यटन बोर्ड के प्रयासों का परिणाम

म.प्र. टूरिज्म बोर्ड द्वारा इस दिशा में निरंतर प्रयास किए जा रहे थे। इस परियोजना के तहत नवंबर 2025 में पचमढ़ी में दो दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई थी, जिसके बाद व्यापक फील्ड वर्क, डेटा कलेक्शन और दस्तावेजीकरण किया गया। फरवरी 2026 में अंतर्राष्ट्रीय ऑडिटर द्वारा ऑन-साइट ऑडिट के बाद इस उपलब्धि पर मुहर लगी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008